## 5

# किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया

शमशेर बहादुर सिंह

0956CH05

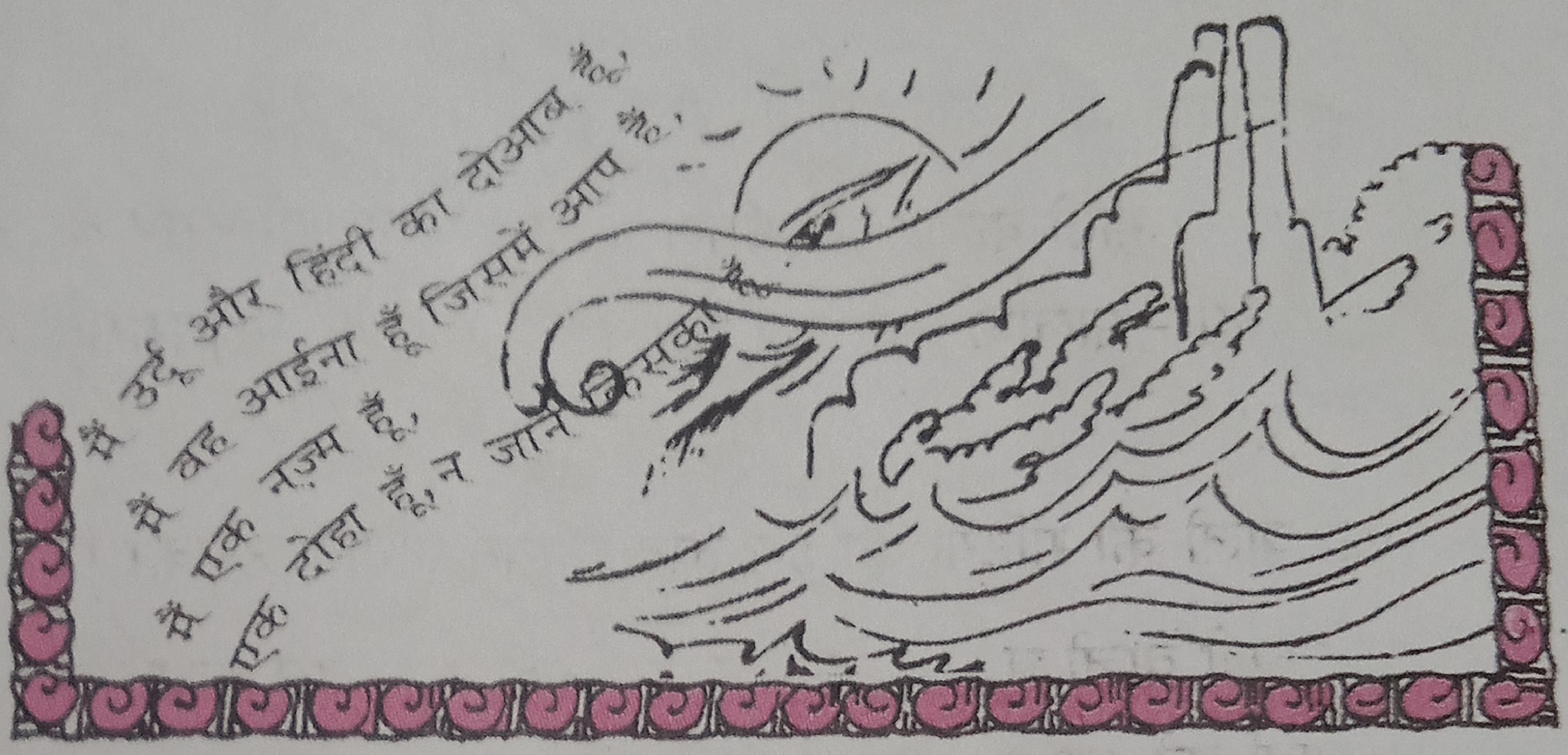
मैं उर्दू और हिंदी का दोआब हूँ
मैं वह आईना हूँ जिसमें आप हैं
मैं एक नज़्म हूँ,
एक दोहा हूँ, न जाने किसका

**एक** ऐसी बात–एक ऐसा जुमला[1]–मुझसे कह दिया गया था कि मैं जिस हालत में था, उसी हालत में और जो कुछ पाँच-सात रुपये मेरे पास थे, उन्हीं को लेकर दिल्ली के लिए पहली ही बस जो मुझे मिलती थी, चुपचाप उसी पर चढ़ा और चल दिया।

तय कर लिया कि हाँ, अब मुझे जो भी काम करना है, करना शुरू कर देना चाहिए! दिल में, दिमाग में, यही समाया हुआ था कि वह काम–पेंटिंग है; इसी की शिक्षा अब मुझे लेनी है और फ़ौरन। उकील आर्ट स्कूल का नाम भर मैंने सुन रखा था; दिल्ली में कहाँ है, यह पता न था...खैर, किस्सा मुख्तसर[2] कि मेरा इम्तिहान लेकर और मेरा शौक देखकर मुझे बिला-फ़ीस के भर्ती कर लिया गया।

मैंने दो-तीन जगहों के बाद करोल बाग में लबे-सड़क[3] एक कमरा लिया और रोज़ाना वहाँ से कनाट प्लेस को सुबह की क्लास में पहुँचने लगा।

---

1. वाक्य 2. संक्षिप्त, साररूप 3. सड़क के किनारे